Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 3, May-June – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 23/05/2020 Accepted on : 09/06/2020 Publication Date: 30/06/2020

बालक-अभिभावक संबंध द्वारा विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन महेश्वर तहसील मध्यप्रदेश के संदर्भ में

कल्पना डोंगरे
सहायक प्रोफेसर
Institute of Science, SAGE University, Indore Madhya Pradesh, India
Email - dongrekalpana06@gmail.com

सारांश : बालक के व्यक्तित्व को पहलू अधिक प्रभावित करते हैं। एक बालक का पारिवारिक वातावरण दूसरा विद्यालयी वातावरण। प्रस्तुत शोध में पारिवारिक वातावरण में बालक अभिभावक संबंध पर विशेष बल दिया गया क्योंकि माता-पिता का अपने बच्चे पर सीधा तथा प्रभावी प्रभाव पड़ता है। यदि किसी बालक का मानसिक विकास अध्ययन या उसके बालक के संबंध के बारे में जानेंगे। अतःऐसी स्थिति से स्पष्ट है कि यदि किसी बालक का मानसिक विकास अच्छा है, तो निश्चित है कि उसका अपने अभिभावक के मध्य संबंध बहुत ही अच्छा है। जितने भी महापुरुष हुए उनकी महानता के पीछे अभिभावक का महत्वपूर्ण हाथ था।

संकेताक्षर : नैतिक मूल्य, अभिभावक, मानसिक ।

१ प्रस्तावना:-

आज के प्रतियोगी युग में जहां एक और बढ़ती जनसंख्या तथा दूसरी और भ्रष्टाचार तथा रिश्वतखोर है ऐसी स्थिति में भी माता.पिता अपने बच्चों को दूसरे बच्चों से अधिक प्रगतिशील देखना चाहते हैं। इसी स्थिति में बच्चे भी अभिभावकों से अपेक्षा रखते हैं कि वह उन्हें समझें उनके विचारों उनकी भावनाओं तथा उनके निर्णयों का सम्मान करें। बालक की स्व प्रगति में नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण हाथ रहता है।

उपर्युक्त पैराग्राफ में कहा कि बालक की स्व प्रगति में नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन नैतिक मूल्यों को छुआ या नापा नहीं जा सकता लेकिन बालक के संपूर्ण व्यवहारों का अध्ययन करके उसे समझा जा सकता है। बालक के नैतिक मूल्यों की कमी या अधिकता से उसके अपने अभिभावक के प्रति संबंध को आसानी से समझा जा सकता है।

इस भौतिकता वादी युग में सबसे अधिक इस बात की आवश्यकता है कि शिक्षा शास्त्री या शिक्षा से जुड़े व्यक्ति बालक .अभिभावक संबंध को सूक्ष्मता से अध्ययन कर आज के अभिभावकों तथा बालकों को बताएं कि उनका ;दोनोंद्ध संतुलन समाज को राष्ट्र को किस प्रकार प्रगतिशील बनाने में सहायक बन सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य इसी दिशा में एक प्रयास है।

२ अध्ययन की आवश्यकता:-

भारतीय संस्कृति सभी संस्कृतियों में महान है। पाश्चात्य संस्कृति के अनुसार शादी से पहले संतान को जन्म देकर उसे खिलाना पिलाना तथा कान्वेंट में पढ़ने भेजना या हॉस्टल में डालना ही नहीं एक आदर्श माता-पिता का उत्तरदायित्व माना जाता है कि जबकि भारतीय संस्कृति के अनुसार ऋग्वेद में मिलता है कि बच्चे के जन्म के समय उसका पिता सर्वप्रथम उसके कान में, अश्म भवः, अन भवः अर्थात तू पत्थर जैसा कठोर बन, अग्नि की तरह बन जन्म से ही कोमल शिशु को पत्थर की तरह बनने की प्रेरणा दी जाती है तथा उसके बाद विविध संस्कारों से जिनमें कुछ संस्कार जन्म से पहले ही शुरू हो जाते हैं, उसे अवगत कराया जाता है वस्तुतः हम यह कह सकते हैं कि बालक के व्यक्तित्व को संस्कारों नैतिक मूल्यों परंपराओं तथा प्रेम से किस प्रकार विकसित करना कि बालक न सिर्फ परिवार, समाज और देश को अपितु संपूर्ण मानव जाति के हितार्थ करें।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बालक का सर्वाधिक विकास 0-8 वर्ष की आयु में होता है और इस अवस्था में बालक अभिभावक के साथ अभिभावक का बालक के साथ सबसे अधिक संपर्क होता है उस अवस्था में जैसा माता-पिता अपने बच्चों के प्रति संबंध रखेंगे बच्चा वैसा ही व्यक्तित्व पाने का प्रयास करता है। जो माता-पिता अपने बच्चों के साथ इस अवस्था में प्रेम, ममता, स्नेह तथा विश्वास के साथ व्यवहार करते हैं तथा साथ ही शिष्टाचार मानवीय गुण नैतिक मूल्य का पाठ पढ़ाते हैं, वह बच्चे दूसरे बच्चों से अधिक विकसित परिपक्व तथा देश के योग्य नागरिक बनते हैं।

लेकिन आज के भौतिकवादी युग में अभिभावक अपने बालक के प्रति संबंध को लेकर न सिर्फ अनभिज्ञ अपितु इस संबंध के सकारात्मक या नकारात्मक दृष्टिकोण के बारे में जानने का प्रयास भी नहीं करते। किसी कारण से अभिभावक व बालक दोनों ही नैतिक मूल्यों के बारे में अछूते रह जाते हैं।

बालक का अभिभावक के साथ विभिन्न वातावरण (शहरी एवं ग्रामीण) में संबंध का बालकों पर प्रभाव पड़ता है या नहीं।

३ शोध की समस्या:-

बालकों का अभिभावकों के साथ कैसा संबंध है तथा यह उनके नैतिक मूल्यों पर उल्लेखनीय प्रभाव डालता है अथवा नहीं, यह जानने हेतु निम्न समस्याओं का चयन किया गया है-

पूर्व बालक अभिभावक संबंधों के परिपेक्ष्य में नैतिक स्तर का अध्ययन एक साथ नहीं किया। इनमें से एक ही कारक का अध्ययन कर लिया गया है, जबकि वर्तमान में नैतिक व्यवहार की समस्या प्रमुख है। बालकों का अभिभावकों के साथ कैसा संबंध है या व्यवहार है तथा यह उनके नैतिक मूल्यों पर उल्लेखनीय प्रभाव डालता है या नहीं इन्हीं समस्याओं को जानना शोध की समस्या है।

समस्या कथन:-

"बालक अभिभावक संबंध द्वारा विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

४ शोध का उद्देश्य:-

यह जानने के लिए कि क्या अभिभावक संबंध का छात्र के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है कुछ उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं :-

- विद्यालय में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के विकास का अध्ययन।
- ग्रामीण परिवेश के बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास का अध्ययन।
- शहरी परिवेश के बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास का अध्ययन।
- बालक-अभिभावक संबंध या लिंग भेद के अंतर्गत बालक-बालिकाओं पर नैतिक मूल्यों के विकास का अध्ययन।

प्रयुक्त परिकल्पनाएं:-

शोध विषय के बारे में प्रारंभिक ज्ञान प्राप्ति के पश्चात शोधकर्ता अपने मस्तिष्क में ऐसा सिद्धांत बना लेता है, जिसके बारे में कल्पना करता है कि वह सिद्धांत और उस की परिकल्पनाओं का आधार सिद्धांत भी हो सकता है। ऐसे काल्पनिक निष्कर्ष उसकी वास्तविकता, उसके अनुसंधान को वास्तविक तथ्यों द्वारा सिद्ध करने की कोशिश करता है अर्थात परिकल्पना अध्ययन विषय से

संबंधित अस्थाई व काल्पनिक निष्कर्ष है जो अनुसंधान का आधार बन सकते हैं। उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्न परिकल्पना है परिकल्पनाएं बनाई गई है:-

- लिंग भेद का ग्रामीण परिवार बालकों पर 'बालक अभिभावक संबंध' का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
- लिंग भेद का ग्रामीण परिवार के बालकों पर नैतिक मूल्यों का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
- लिंग भेद शहरी परिवार के बालकों पर 'बालक अभिभावक संबंध' का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
- लिंग भेद का शहरी परिवार के बालकों पर नैतिक मूल्यों का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
- लिंग भेद का बालकों पर 'बालक अभिभावक संबंध' का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
- लिंग भेद का बालकों के नैतिक मूल्यों पर सार्थक प्रभाव समान रूप से पड़ता है।

५ प्रयुक्त विधि:-

अनुसंधान हेतु सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई है, क्योंकि समूह की सामान्य विशेषताओं का संरचनात्मक वर्णन करने के लिए समूह अथवा घटनाओं की सहायता से उस परिस्थिति में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की जाती है तथा इसकी सहायता से बालक अभिभावक संबंधों का मूल्यांकन किया जा सकता है।

प्रयुक्त उपकरण:-

प्रत्येक शोध कार्य की महत्ता उपकरण पर निर्भर करती है, क्योंकि उनकी उपयुक्तता, वैधता, विश्वसनीयता पर ही प्रदत्तों की विश्वसनीयता एवं वैधता निर्भर करती है। उससे प्राप्त निष्कर्षों की क्षमता द्वारा व्यवहारिकता व उपयोगिता निर्धारित होती है। अतः प्रत्येक शोध कार्य में उपयुक्त उपकरणों का चयन एवं विकास आवश्यक है। इस शोध में कार्य में दो उपकरण प्रयुक्त किए गए हैं-

- डॉ नलिनी राव का 'बालक अभिभावक संबंध परीक्षण',
- विद्या भारती प्रकाशन अनुसंधान केंद्र, सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर मध्य प्रदेश का 'नैतिक मूल्य परीक्षण'।

अध्ययन विधि-

प्रस्तुत शोध कार्य में अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई है। प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण विधि के उद्देश्यो (सूचनाओं का संकलन किसी विशिष्ट कारक के अस्तित्व का पता लगाना, व्यवहार या घटना का पूर्वानुमान लगाना वह दो चरों के मध्य पारस्परिक संबंधों का पता लगाना) तथा उसके विभिन्न सोपानों (उद्देश्य निर्धारण, उपकरण व प्रविधि चयन उपकरणों का प्राक परीक्षण, प्रतिदर्श का चयन, दत्त संकलन व विश्लेषण) को पूरा करता है। अतः अनुसंधान हेतु सर्वेक्षण विधि को चुना गया है।

समस्या के संबंध में व्यवस्थित और संपूर्ण संकलन तथा विश्लेषण करना सर्वेक्षण है।

न्यादर्श-

अनुसंधान हेतु कक्षा 8 के विद्यार्थियों को सजातीय, सीमित व वास्तविक न्यादर्श के रूप में चुना गया है।उपर्युक्त लघु शोध प्रबंध के उद्देश्य की पूर्ति हेतु सभी विद्यार्थी जो आयु वर्ग 13-14 वर्ष के आते हैं।अतः महेश्वर तहसील जिला खरगोन के 2 विद्यालय शासकीय माध्यमिक विद्यालय की कक्षा 8 के 50-50 ग्रामीण-शहरी विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया है।

इस परीक्षण में 100 प्रश्न रखे गए हैं जिनके आधार पर बालक-अभिभावक संबंधों का विश्लेषण किया जाता है। ये है- संरक्षण, लाक्षणिक दंड वास्तविक (वस्तु रूप में) दंड, नकारात्मक व्यवहार, अपेक्षाजनक व्यवहार, समानता, लाक्षणिक पुरस्कार, वास्तविक (वस्तु रूप में) पुरस्कार, प्रेम तथा उपेक्षा।

इस परीक्षण की विश्वसनीयता त्रुटि के 0.01 स्तर पर 0.77 से 0.87 तक तथा वैधता 0.05 स्तर पर पर्याप्त अर्थपूर्ण पाई गई है, जिसमें सहसंबंध गुणांक का मान 0.32 8 से 0.45 था।

प्रयुक्त सांख्यिकी-

परीक्षणों की सहायता से संकलित किए गए आंकड़ों से प्राप्त सूचनाएं जटिल, असंबंध तथा बिखरे रूप में होती हैं। इन सूचनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन करने से पहले इन्हें निश्चित रूप प्रदान करना आवश्यक है। इस हेतु सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जाता है। सांख्यिकी अंको में व्यक्त गणना व मापन से प्राप्त तथ्यों का संकलन है, यह प्रदत्तो का विवेचन करती है, जो कि उचित रूप में परिशुद्ध होते हैं, इन पर नियमित विधि से संकलन का भी प्रभाव पड़ता है। यह एक गणितीय प्रविधि है, जिसके द्वारा आंकड़ों का समूह संग्रह वर्गीकरण, सारणीयन, गोचर घटनाओं का की व्याख्या, वर्णन व तुलना के लिए प्रयोग किए जाते हैं। अतः सांख्यिकी अनुसंधान का आवश्यक अंग है।

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन
- टी अनुपात

६ उपलब्धि तथा निष्कर्ष:-

पूर्व उक्त अध्ययन में 'बालक अभिभावक संबंध द्वारा विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन' विषय के अंतर्गत (1) विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावक संबंधों का अध्ययन (2) बालक-/अभिभावक संबंधों का नैतिक मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन आदि उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सर्वेक्षण विधि की सहायता से तथा 200 छात्र-छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चुनकर अनुसंधान कार्य किया गया। प्राप्त आंकड़ों की सांख्यिकी घटनाओं के पश्चात प्रयुक्त परिकल्पना ओं के जो परिणाम व निष्कर्ष प्राप्त हुए निम्नलिखित हैं-

- लिंगभेद का ग्रामीण परिवारों के बालकों पर बालक अभिभावक संबंध का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है-

शोध के द्वारा प्राप्त यह निष्कर्ष स्वयं में उचित प्रतीत होता है क्योंकि वर्तमान परिपेक्ष में ग्रामीण परिवेश में भी परिवर्तन हुआ है। आज ग्रामीण परिवेश के रहन-सहन आचार-विचार तथा सोचने के ढंग में काफी हद तक बदलाव आया है। आज ग्रामीण अभिभावक पुत्र तथा पुत्री में अंतर नहीं समझता तथा वह पुत्र तथा पुत्री दोनों को शिक्षा समान रूप से दिलवाता है। ग्रामीण अभिभावक अपने पुत्र या पुत्री के प्रति भावनात्मक रिश्ता संबंध भी समान रूप से बनाता है। जिसके फलस्वरूप पुत्र और पुत्री को शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक विकास समान रूप से होता है।

- लिंगभेद का ग्रामीण परिवारों के बालकों पर नैतिक मूल्यों का प्रभाव समान रूप से नहीं पड़ता-

शोध के द्वारा उपर्युक्त निष्कर्ष भी उचित प्रतीत होता है। यूं तो बालक अभिभावक संबंध को छात्र व छात्राओं पर प्रभाव समान है, लेकिन नैतिक मूल्यों की जहां बात आती है, वहां पुत्र तथा पुत्री में समानता देखी जा सकती है। ग्रामीण परिवेश के बालक बालिकाओं की अपेक्षा अधिक स्वच्छंद हो गए हैं, क्योंकि उन्हें अभिभावक कृषि कार्य में लगाने की बजाय, उन्हें उच्च शिक्षा देने की बात अधिक करते हैं, वहीं दूसरी ओर बालिकाएं जहां एक और अपनी शिक्षा प्राप्त करती हैं, वहीं दूसरी और घरेलू कार्य भी अत्यधिक करती हैं, जिसके फलस्वरूप उन्हें जिम्मेदारी, सामाजिक भाव तथा नैतिकता अधिक देखी जा सकती है।

- लिंगभेद का शहरी परिवेश के बालकों पर बालक अभिभावक संबंध का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता-

शोध के निष्कर्ष के फलस्वरूप उक्त परिणाम अक्षरसः सत्य है, क्योंकि आज शहरी परिवेश में पुत्र तथा पुत्री भेद नहीं के बराबर माना जाता है। अभिभावक जिस तरह पुत्र को उच्च शिक्षा प्राप्त करवाकर उच्च संस्थानों में कार्यरत देखना चाहते हैं, वही ऐसी आशा उन्हें पुत्रियों से भी है। अतः वे अपनी पुत्रियों को पुत्रों के समान ही मानकर उनकी शिक्षा-दीक्षा पूरी करते हैं। अतः उपर्युक्त कथन सत्य प्रतीत होता है।

- लिंगभेद का शहरी बालकों पर नैतिक मूल्यों का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता-

शोध के द्वारा उक्त कथन सही जान पड़ता है। ग्रामीण परिवेश की तुलना में शहरी परिवेश के बालकों को नैतिक मूल्य कम या अधिक रूप से प्रभावित न कर अपितु समान रूप से प्रभावित करते हैं, क्योंकि ग्रामीण वातावरण में अभिभावक बालकों के भावनात्मक संबंध तो समान रहता है, लेकिन कुछ बातों में उनमें अंतर आता है। लेकिन शहरी परिवेश में बालिका में नगण्य अंतर माना जाता है। फलस्वरूप उनमें नैतिकता समान रूप से विकसित होती है।

- लिंग भेद का बालकों के 'बालक-अभिभावक संबंध' का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता-

वर्तमान युग में लड़के और लड़कियां दोनों को ही माता पिता के समान स्नेह, सुरक्षा व संरक्षण प्राप्त होता है और यह उनके सुसमायोजन के लिए आवश्यक है, इसलिए बालकों पर 'बालक-अभिभावक संबंध' का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

- लिंग भेद का बालकों के नैतिक मूल्यों पर सार्थक प्रभाव समान रूप से पड़ता है-

जहां एक ओर समानता की बात करके लड़के-लड़कियों में कोई भेद न करके माता-पिता उन्हें समान रूप से मानते हैं, वही वह अपने बच्चों से समान प्रतिक्रिया भी चाहते हैं। अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा- दीक्षा संस्कार तथा उनके उनमें भावनात्मक गुणों को समान रूप से देते या प्रदर्शित करते हैं, फलस्वरूप आज के समय में उनमें नैतिकता का गुण भी समान रूप से पाया जाता है, अतः लिंगभेद का बालकों के नैतिक मूल्यों पर सार्थक प्रभाव समान रूप से पड़ता है।

७ शैक्षिक निहितार्थ:

प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्ष से पता चलता है कि बालक-अभिभावक संबंधों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य अभिभावकों को जहां बालकों के साथ अच्छे संबंध रखने के लिए प्रेरित करेगा, वही उनके अनुचित पक्षपात एवं लाड-प्यार पर भी विचार करने योग्य स्थिति निर्माण करेगा।

जिस प्रकार छात्र-अभिभावक संबंध नैतिक गुणों को प्रभावित करते हैं, वही यह संबंध अभिभावक उनके संतान के मन में सुरक्षा की भावना को जन्म देते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि छात्रों के मन में संस्कारों, आचार-विचार, व्यवहार, निर्णय क्षमता, ईमानदारी, शिष्टाचार, मानवता तथा गंभीरता जैसे सद्गुणों का प्रदर्शन तभी संभव है जब छात्रों का अभिभावकों के साथ निकटता तथा सकारात्मकता का भाव हो। अभिभावक चाहते हैं कि उनका पुत्र या पुत्री समाज में आदर्श स्थान प्राप्त करें। अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करें या देश की उन्नति में सहायक बने, तो यह आवश्यक है कि वह अपने बालक को में मधुर संबंध स्थापित करें।

अतः अतः यह शोध श्रेष्ठ अध्यापक छात्र संबंधों के लिए भी निर्धारक सिद्ध होगा। यह शोध यह धारणा भी निर्मूल सिद्ध करता है कि ग्रामीण परिवारों के अभिभावक शहरी परिवारों के अभिभावक की अपेक्षा बालक अभिभावक संबंध के प्रति कम जागरूक तथा कम आधुनिक है।

प्रस्तुत कार्य विद्यालय के संचालकों के लिए भी दिशा निर्धारित करने वाला सिद्ध होगा तथा उन्हें आत्म निरीक्षण एवं अपेक्षित परिवर्तन करने के लिए प्रेरित करेगा।

संदर्भ सूची:-

1. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान : डॉ प्रीति वर्मा डॉ एस एन श्रीवास्तव, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा षष्ठ 655-359.
2. Armentrout, J.A. (1972) : Sociometric classroom popularity and Children's Report of Parental Child raring behaviour psychological reports 30(1), 261-222.
3. Best, J.W.,J.V. John.: Research in Education, Prentice Hall of India, New Delhi, P.8-26, 220-222.
4. Boring, E.G. : A History of Educational Psychology, Bombay, 1966.
5. Bronfenbranmen, U. (1961) : Toward a Theoretical Model for the Analysis of Parent Child Relationship in a Social Context in J.C. Glidewell (ed.) Parent attitude & Behaviour, Springfied III Charles C. Thomas.
6. Eysenck, N.J.et.al. : Encyclopaedia of psychology, London 1972.
7. Good, V.V. : Dictionary of Education.
8. Gecas, V.D.L. Thomas&W. Weigert (1970) : "Perceived Parent Child intenaction and Boys" Self Esteem in Two Cultural Contexts.
9. Rao, Dr. Nalini : Manual for Parent Child Relationship Scale.
10. Sears, R.R., E.E. Maccoby : HARPER & ROW & N. Levin (1957) Patterns of Child Rearing, New Work.
11. Smart, M.S. (1968) : Self Esteem & Social Personal Orientation in Pre-adolesce and Adolescence Related to Parental Behaviour, Doctoral Thesis, Delhi, Delhi University.
12. Sullivan, H.S. (1953). : The Interpersonal Theory of Psychiatry.